Toppersnotes
Unleash the topper in you

BPSC

TRE 4.0

इतिहास भाषा शिक्षक (कक्षा 11-12)

(इतिहास विषय शिक्षक)

भाग - 1

SIERRA INNOVATIONS

विषय सूची

क्र.सं.	अध्याय	पृष्ठ सं.
1.	सिंधु घाटी सभ्यता / हड़प्पा सभ्यता	1
2.	प्राचीन काल में नवीन धार्मिक सम्प्रदाय का उदय	13
3.	पौराणिक धर्म	35
4.	सूफी, भक्ति, सिक्ख आन्दोलन	60
5.	मुगल साम्राज्य	81
6.	मुगल कला संस्कृति	104
7.	मौर्यकालीन प्रशासन	139
8.	मौर्योत्तर काल	163
9.	1857 का विद्रोह / क्रांति	197
10.	भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस	207
11.	सुभाष चन्द्र बोस व आजाद हिन्द फ़ौज	234

1 CHAPTER सिंधु घाटी सभ्यता / हड़प्पा सभ्यता

प्रथम - मिश्र की सभ्यता और दूसरी - मेसोपोटामिया

सिंधु सभ्यता का स्वरूप

1. आय ऐतिहासिक काल की सभ्यता:

- ✓ आय ऐतिहासिक - Proto-Historical - इतिहास का वह काल जिसमें लिखा हुआ तो मिला है, किंतु पढ़ा नहीं जा सकता।
- ✓ सिंधु सभ्यता में भी लिपि मिली है, लेकिन आज तक पढ़ी नहीं जा सकती। इसलिए इसे आय ऐतिहासिक काल की सभ्यता कहा जाता है।
- ✓ इस सभ्यता की जानकारी के लिए हमें पुरातात्विक साक्ष्यों पर निर्भर रहना पड़ता है।
- ✓ सभ्यता के लोगों को लिपि का ज्ञान था। इस समय के मानव ने लिखा भी है, किंतु हम इसे आज तक पढ़ नहीं पाए हैं।

2. **कांस्य युगीन सभ्यता:** Bronze Age.

- ✓ इस सभ्यता के लोग तांबे में टिन मिलाकर कांसा धातु बनाने में निपुण थे।
- ✓ इस सभ्यता में कांस्य का प्रयोग बड़े पैमाने पर हुआ है।
- ✓ इसे दुनिया की तीसरी कांस्य युगीन सभ्यता कहा जाता है।

प्रथम - पत्थर युग	तीसरा - कांस्य युग
दूसरा - ताम्र युग	चौथा - लोह युग

- ✓ दुनिया की प्रथम कांस्य युगीन सभ्यता - मिश्र की सभ्यता (अफ़्रीका) - (नील नदी)
- ✓ दुनिया की दूसरी कांस्य युगीन सभ्यता - मेसोपोटामिया की सभ्यता - (इराक) (दजला - फरात नदी)

3. **नगरीय सभ्यता: (Urban Civilization)**

- ✓ यहां कई स्थल मिले जो नगरीय थे।
- ✓ यहां नगर नियोजित रूप से बसे हुए मिले हैं।
- ✓ इसी कारण गार्डन चाइल्ड ने इसे भारत की "प्रथम नगरीय क्रांति" कहा।

4. नदीय सभ्यता:

- ✓ इस सभ्यता के बहुत सारे स्थल नदियों के किनारे स्थित थे, इसी कारण इसे नदीय सभ्यता भी कहा जाता है। जैसे:
- ✓ हड़प्पा - रावी, मोहनजोदड़ो - सिंधु, कालीबंगा - घग्घर, रोपड़ - सतलज।
- ✓ सिंधु सभ्यता के समकालीन निम्न नदीय सभ्यताएं -
    1. चीन की सभ्यता - ह्वांगहो नदी
    2. मिश्र की सभ्यता - नील नदी
    3. मेसोपोटामिया की सभ्यता - दजला, फरात (थुगरफाइरिस)

सिंधु सभ्यता का काल निर्धारण

- ➢ 3300 BC से पूर्व तथा नवपाषाण काल के बाद का काल पाक हड़प्पा काल कहलाता है।
- ➢ प्राक हड़प्पा बस्तियाँ नवपाषाण काल तथा अली हड़प्पा के बीच संक्रमण का प्रतिनिधित्व करती हैं।

Unleash the topper in you

- हड़प्पा सभ्यता, प्राक हड़प्पा सभ्यता का निरंतर विकास का परिणाम थी।
- इस काल में मेहरगढ़, मिराना (हरियाणा), कोटदीजी (पाकिस्तान), अर्मरी (पाकिस्तान) आदि प्रमुख स्थल थे।
- कार्बन डेटिंग पद्धति के अनुसार काल क्रम:

1. **प्राक हड़प्पा** - 3300 BC
   - ✓ स्थल - मेहरगढ़, कोटदीजी, मिराणा, अमरी, सोथी आदि।
   - ✓ नवपाषाण काल तथा आरंभिक हड़प्पा के बीच का समय।
2. **आरंभिक हड़प्पा** - 2600 BC
   - ✓ स्थल - आमरी, कुली नाल, कोटदीजी, आदि प्रमुख स्थल हैं।
   - ✓ यह हड़प्पा सभ्यता का काल है।
3. **विकसित हड़प्पा** - 1900 BC
   - ✓ यह भी हड़प्पा का वास्तविक काल माना जाता है।
   - ✓ इसके प्रमुख स्थल - कालीबंगा, हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, लोथल आदि प्रमुख हैं।
4. **पतनोन्मुख काल** - 1500 BC
   - ✓ हड़प्पा सभ्यता का पतन का काल है।
5. **उत्तर हड़प्पा** - 300 BC
   - ✓ हड़प्पा सभ्यता के बाद का काल है, जिसमें वैदिक काल शामिल है।
   - ✓ **हड़प्पा सभ्यता के काल के बारे में विद्वानों के अलग-अलग मत हैं:**

विद्वान	काल
सर जॉन मार्शल	3250 ई.पू. - 2750 ई.पू.
अर्नेस्ट मैके	2800 ई.पू. - 2500 ई.पू.
माधो स्वरूप वत्स	2700 ई.पू. - 2500 ई.पू.
डेल्स	2800 ई.पू. - 1800 ई.पू.
C.J. गैड	2350 ई.पू. - 1750 ई.पू.
झा एवं श्रीमाली	2800 ई.पू. - 2000 ई.पू.
मार्टिमर व्हीलर	2500 ई.पू. - 1500 ई.पू.
NCERT	2500 ई.पू. - 1800 ई.पू.
रोमिला थापर/डी. पी. अग्रवाल	2300 ई.पू. - 1700 ई.पू.
रेडियो कार्बन	2300 ई.पू. - 1100 ई.पू.

- ✓ इन सभी विद्वानों में सर्वमान्य काल **C.J. गैड** का माना जाता है।
- ✓ C.J. गैड ने हड़प्पा सभ्यता का कालक्रम 2350 ई.पू. - 1750 ई.पू. माना है।

<u>कार्बन डेटिंग पद्धति (रेडियो कार्बन विधि)</u>

- इस पद्धति की खोज 1949 ई. में विलार्ड फ्रैंक लीबी (शिकागो विश्वविद्यालय के प्रोफेसर) ने की। इन्हें 1960 ई. में रसायन के क्षेत्र में नोबेल पुरस्कार भी प्रदान किया गया।
- इस पद्धति का भारत में पहली बार प्रयोग भंडारकर शोध संस्थान, पुणे में किया गया।
- इस पद्धति के तहत सिंधु सभ्यता का कालक्रम 2300 ई.पू. - 1750 ई.पू. माना जाता है।

- कुछ स्रोतों के आधार पर कार्बन डेटिंग पद्धति का भारत में प्रथम प्रयोग टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ फंडामेंटल रिसर्च, मुंबई में हुआ था।
- इसमें कार्बन पदार्थों की तिथि निश्चित करने का आधार उस पदार्थ में मिलने वाले कार्बन-14 ((C^{14})) के आधे जीवन की गणना है।
- अर्थात प्रत्येक जीवधारी के शरीर में कार्बन-12 (C^{12}) तथा कार्बन-14 (C^{14}) से युक्त होता है।
- जीवधारियों में कार्बन-14 की मात्रा 5730 वर्षों में घटकर आधी रह जाती है।
- डी.पी. अग्रवाल का मत भी कार्बन डेटिंग के कालक्रम के समान ही है।
- डी.पी. अग्रवाल ने भी इस सभ्यता का कालक्रम 2300 ई.पू. - 1750 ई.पू. माना है।
- अतः यही कालक्रम सिंधु सभ्यता के लिए सर्वाधिक मान्य प्रतीत होता है।
- पर्वतों में कार्बन-14 के घटने की प्रक्रिया को 'रेडियोधर्मिता' कहा गया है।
- यहाँ के निवासी हाथी दांत के उपकरण बनाना जानते थे।

सिंधु सभ्यता की उत्पत्ति

- सिंधु सभ्यता की उत्पत्ति के बारे में विद्वानों ने कई प्रकार के मत दिए।
- **मेसोपोटामिया (सुमेरियन) सभ्यता से उत्पत्ति मानने वाले विद्वान**
- **विदेशी विद्वान:-** गॉर्डन चाइल्ड, सर जॉन मार्शल, अर्नेस्ट मैके, क्रमर
- **भारतीय विद्वान:-** डी.डी. कौशांबी, एच.डी. सांकलिया
- इन प्रमुख विद्वानों की मान्यता है कि सिंधु सभ्यता को सुमेरियन लोगों ने बसाया था।
- **सिंधु सभ्यता और मेसोपोटामिया सुमेरियन सभ्यता की समानताएँ:**

  I. दोनों को लिपि का ज्ञान था।
  II. दोनों सभ्यताएँ नगरीय थीं।
  III. दोनों सभ्यताओं के लोग चाक पर मिट्टी के बर्तन बनाते थे।
  IV. दोनों को लोहे का ज्ञान नहीं था।
  V. दोनों सभ्यताओं में मकान कच्ची और पक्की ईंटों के बने थे।
  VI. जल निकासी की समान व्यवस्था थी।
  VII. दोनों में व्यापार व्यवस्था के भी प्रमाण मिले हैं, जैसे - कालीबंगा से मेसोपोटामिया की बेलनाकार मुहर।

- इस आधार पर विद्वानों ने इसकी उत्पत्ति सुमेरियन सभ्यता से मानी है।
- इसके बाद इसको गहराई से अध्ययन करने के बाद इस मत को तर्कसंगत नहीं माना गया।
- क्योंकि सिंधु सभ्यता और सुमेरियन सभ्यता में असमानताएँ देखने को भी मिलती हैं।
- अतः इन्हीं तथ्यों के आधार पर इस विदेशी मत का खंडन किया जाता है।
- **इस मत का खण्डन वाले निम्न तर्क दोनों की असमानतायें**

  I. सिंधु सभ्यता की नगर योजना दुनिया की सबसे अच्छी नगर योजना थी, वही मेसोपोटामिया की नगर योजना निचले स्तर की थी।
  II. दोनों सभ्यताओं की लिपि अलग-अलग है। सुमेरियन सभ्यता की लिपि कीलाक्षर लिपि है, वहीं सिंधु सभ्यता की लिपि भावचित्रात्मक/वुस्ट्रोफेदम है। सुमेरियन सभ्यता की लिपि में 900 अक्षर थे, वहीं यहाँ की लिपि में 400 अक्षर मिले हैं।
  III. सुमेरियन सभ्यता में जल निकासी व्यवस्था घटिया स्तर की थी, वहीं सिंधु सभ्यता की जल निकासी व्यवस्था उत्तम थी।
  IV. मेसोपोटामिया से व्यवस्थित/भव्य कब्रें प्राप्त हुई हैं, वहीं सिंधु सभ्यता में इसका अभाव है।
  V. दोनों सभ्यताओं के बर्तन, उपकरण, मुहरें, मूर्तियां आदि के आकार-प्रकार में अंतर है।

- अतः इन्हीं तर्कों के आधार पर हम यह मानते हैं कि सिंधु सभ्यता को सुमेरियन लोगों ने नहीं बसाया था।
- **सिंधु सभ्यता के निर्माता आर्यों को मानने वाले विद्वान:** बी.बी. लाल, के.एन. शास्त्री, पुसालकर, डॉ. लक्ष्मण स्वरूप वत्स, एस. आर. राव, टी.एन. रामचंद्रन।
- पुसालकर और आर. पी. चंद्रा ने बताया कि ऋग्वेद में उल्लिखित 'असुर' ने इस सभ्यता को बसाया था।
- सबसे पहले बी.बी. लाल ने बताया था कि हड़प्पा और आर्य सभ्यता के लोग एक ही थे तथा दोनों में भौगोलिक समानताएँ थीं।

इस मत का खंडन करने वाले विभिन्न प्रकार के तर्क:

1. वैदिक सभ्यता ग्रामीण थी, जबकि सिंधु सभ्यता नगरीय थी।
2. वैदिक सभ्यता कृषि प्रधान थी, वहीं सिंधु सभ्यता व्यापार प्रधान थी।
3. सिंधु सभ्यता के मकान पक्की ईंटों के थे, जबकि आर्यों के मकान घास, फूस तथा बांस के बने होते थे।
4. सिंधु सभ्यता के लोगों को लोहे का ज्ञान नहीं था, जबकि वैदिक आर्यों को लोहे का ज्ञान था।
5. सिंधु सभ्यता के लोग लिंग पूजा तथा मूर्ति पूजा करते थे, जबकि वैदिक सभ्यता के लोग इसके विरोधी थे।
6. सिंधु सभ्यता की अपनी लिपि थी, जबकि आर्यों में लिपि का अभाव मिलता है।
7. आर्यों का प्रिय पशु घोड़ा था, जबकि सिंधु सभ्यता में इसका अभाव दिखता है।
8. सिंधु सभ्यता के धार्मिक जीवन में वृषभ की महत्ता थी, जबकि वैदिक सभ्यता में गाय को पुज्य माना गया है।
9. वैदिक सभ्यता का समाज पितृसत्तात्मक था तथा सिंधु सभ्यता का समाज मातृसत्तात्मक था।
10. सिंधु सभ्यता के लोग शांतिप्रिय थे, जबकि वैदिक सभ्यता के लोग युद्धप्रिय थे।

- आदि तर्कों के आधार पर कहा जा सकता है कि सिंधु सभ्यता के निर्माता आर्य नहीं थे।

सिंधु सभ्यता के निर्माता प्रवासी मानने वाले विद्वान:

- राखालदास बनर्जी, सुमित कुमार चटर्जी।
- इन विद्वानों के अनुसार द्रविड़ लोगों की भाषा तथा सिंधु सभ्यता की लिपि एक जैसी थी।
- इनके अनुसार द्रविड़ लोगों का मूलनिवास स्थान ब्लूचिस्तान बताया गया है।

  अतः इसके तर्क का खंडन किया जा चुका है।
- **हड़प्पा सभ्यता के निर्माता पूर्व की संस्कृतियों के लोग थे। यह मत देने वाले विद्वान:**

  विद्वान - रोमिला थापर, अमलानंद घोष, आल्चिन दम्पति, फेयर सर्विस, धर्मपाल अग्रवाल, डी. जी. अग्रवाल।

1. अमलानंद घोष तथा धर्मपाल अग्रवाल ने सिंधु सभ्यता के निर्माता सोथी संस्कृति के लोग थे।
   - ✓ सोथी संस्कृति राजस्थान में विकसित हुई थी। (गंगानगर, हनुमानगढ़)
   - ✓ सोथी की खोज अमलानंद घोष ने की।
   - ✓ इसे कालीबंगा द्वितीय कहा जाता है।
2. रोमिला थापर तथा फेयर सर्विस ने ग्रामीण संस्कृति को (बलूची ग्रामीण संस्कृति)

   सिंधु सभ्यता के उद्भव/उत्पत्ति का आधार माना है।
   - ✓ अतः विद्वानों का उत्पत्ति के बारे में यही मत सर्वमान्य प्रतीत होती है।

Toppersnotes Unleash the topper in you

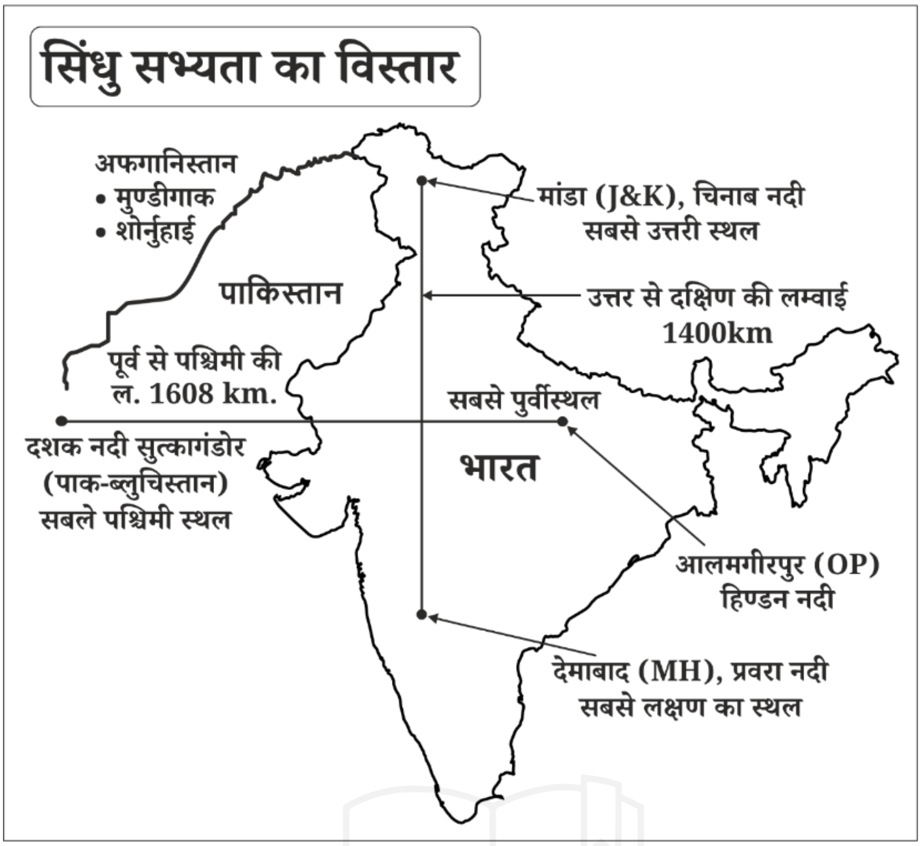

- ✓ यह सभ्यता मुख्य रूप से भारत और पाकिस्तान में विकसित हुई थी।
- ✓ इसके 2 स्थल अफगानिस्तान में भी मिले हैं- शोर्तुघई तथा मुंडीगाक।
- ✓ शोर्तुघई इस सम्पूर्ण सभ्यता का सर्वाधिक उत्तरी छोर है।
- ✓ भारत में स्थित सिंधु सभ्यता का सर्वाधिक उत्तरी स्थल - मांडा, जम्मू-कश्मीर में चिनाब नदी के किनारे स्थित है।
- ✓ मांडा का उत्खनन 1976-77 में मधुबाला तथा जगपति जोशी द्वारा किया गया।
- ✓ सिंधु सभ्यता का सबसे दक्षिणी स्थल - जब से धरना स्थल दैमाबाद (MH)।
- ✓ दैमाबाद महाराष्ट्र में गोदावरी की सहायक नदी प्रवरा के किनारे स्थित था।
- ✓ दैमाबाद से ताम्र पाषाण काल के भी अवशेष प्राप्त हुए हैं।
- ✓ दैमाबाद का उत्खनन 1974-79 में एस. ए. सली ने किया।
- ✓ सिंधु सभ्यता का सबसे पूर्वी स्थल आलमगीरपुर (उत्तर प्रदेश) है।
- ✓ आलमगीरपुर उत्तर प्रदेश में यमुना की सहायक नदी हिंडन के किनारे स्थित है।
- ✓ आलमगीरपुर का उत्खनन 1958 में यज्ञदत्त शर्मा ने किया था।
- ✓ सिंधु सभ्यता का सबसे पश्चिमी स्थल सुत्कागेंडोर (बलूचिस्तान, पाकिस्तान) है।
- ✓ सुत्कागेंडोर, सिंधु की सहायक नदी दाश्क के किनारे स्थित है।
- ✓ सुत्कागेंडोर का उत्खनन 1927 में सर ए. स्टाइन ने किया था।
- ✓ सिंधु सभ्यता का दूसरा सबसे उत्तरी स्थल रहमान ढेरी (पाकिस्तान) है।
- ✓ सिंधु सभ्यता का दूसरा पश्चिमी स्थल सुत्काकोह (बलूचिस्तान, पाकिस्तान) है, जो शादी कौर नदी के किनारे स्थित है।
- ✓ सिंधु सभ्यता का दूसरा पूर्वी स्थल होलास (उत्तर प्रदेश) है।
- ✓ सिंधु सभ्यता का दूसरा सबसे दक्षिणी स्थल भगतराव (गुजरात) है।
- ✓ कुछ विद्वानों के अनुसार, दूसरा सबसे दक्षिणी स्थल मालवन है।

- ✓ सिंधु सभ्यता की उत्तर (मांडा) से दक्षिण (दैमाबाद) की लंबाई लगभग 1400 किमी है।
- ✓ सिंधु सभ्यता की पूर्व (आलमगीरपुर) से पश्चिम (सुत्कागेंडोर) तक की लंबाई लगभग 1600 किमी है।
- ✓ यह दुनिया की सबसे विस्तृत सभ्यता थी।
- ✓ यह सभ्यता त्रिभुजाकार में फैली हुई थी, जो लगभग 13 लाख वर्ग किमी क्षेत्र में फैली हुई थी।
- ✓ सिंधु सभ्यता के स्थलों का सर्वाधिक विस्तार 'हकरा-घग्गर' (प्राचीन सरस्वती) के क्षेत्र में है।
- ✓ यह सभ्यता उत्तर में चिनाव, दक्षिण में प्रवरा, पूर्व में हिंडन तथा पश्चिम में दाश्क नदियों के किनारे के मध्य स्थित थी।
- ✓ इस सभ्यता का मुख्य क्षेत्र वर्तमान पाकिस्तान में स्थित था।

क्र.	स्थल	उत्खनन समय	नदियां	स्थान	खोज कर्ता
1	हड़प्पा	1921	रावी	शाहिवाल जिला, पंजाब, पाकिस्तान	दयाराम साहनी
2	मोहनजोदड़ो	1922	सिन्धु	लरकाना, सिंध प्रान्त, पाकिस्तान	राखालदास बनर्जी
3	सुत्कागेंडोर	1927	दाश्क	बलूचिस्तान प्रान्त पाकिस्तान	आर. एस. स्टाइन
4	चन्हुदड़ो	1931	सिन्धु	सिंधु प्रांत पाकिस्तान	एन. जी. मजूमदार
5	रोपड़	1950	सतलज	पंजाब, भारत	बी. बी. लाल
6	कालीबंगा	1951-52	घग्गर	राजस्थान, भारत	अमलानंद घोष
7	लोथल	1957	भोगवा	गुजरात, भारत	एस. आर. राव
8	धोलावीरा	1967-68	मानसर व मनहर	गुजरात, भारत	जगपति जोशी
9	सुरकोटदा	1960	-	गुजरात, भारत	जगपति जोशी

10	आलमगीरपुर	1958	हिंडन	उत्तर प्रदेश, मेरठ, भारत	यज्ञदत्त शर्मा
11	मांडा	1976	चिनाव	जम्मू-कश्मीर, भारत	मधुबाला व जे.पी. जोशी
12	राखीगढ़ी	1969	घग्गर	हरियाणा, भारत	रफीक मुग़ल
13	बनावली	1973	घग्गर	हरियाणा, भारत	आर. एस. बिष्ट

हड़प्पा सभ्यता का विकास क्रम/इन नगरों को तीन भागों में विभाजित किया जाता है:

1. **आरंभिक हड़प्पा/प्राक्-हड़प्पा काल (3300 ई.पू. - 2600 ई.पू.)**
   - ✓ इसमें प्रमुख नगर: सोंधी, कालीबंगा, बनावली, मिराना, राखीगढ़ी, धोलावीरा आदि।
   - ✓ आज तक कुल 200 स्थल इसके मिल चुके हैं।
   - ✓ भारत में इसके लगभग 179 स्थल खोजे जा चुके हैं।
2. **विकसित हड़प्पा/परिपक्व हड़प्पा काल (2600 ई.पू. - 1900 ई.पू.)**
   - ✓ इन स्थलों की भारत में कुल संख्या 570 है।
   - ✓ पाकिस्तान में इनकी संख्या 297 है।
   - ✓ इन स्थलों में: हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, चन्हुदड़ो, लोथल, अलिमुराद आदि।
3. **उत्तर/परवर्ती हड़प्पा काल (1900 ई.पू. - 1300 ई.पू.)**
   - ✓ ऐसे स्थलों की भारत में संख्या 180 है।
   - ✓ वहीं पाकिस्तान में इनकी संख्या 121 है।
   - ✓ अब तक हड़प्पा सभ्यता के कुल 3000 स्थल खोजे जा चुके हैं।
   - ✓ सिंधु सभ्यता के सर्वाधिक स्थल भारत में स्थित हैं।

तथ्य:

1. सिंधु सभ्यता का सबसे बड़ा स्थल राखीगढ़ी (हरियाणा, भारत) है।
2. सिंधु सभ्यता का दूसरा बड़ा स्थल मोहनजोदड़ो (सिंध, पाकिस्तान) है।
3. सिंधु सभ्यता का तीसरा बड़ा स्थल हड़प्पा (पंजाब, पाकिस्तान) है।
4. सिंधु सभ्यता का चौथा बड़ा स्थल गनेड़ीवाल (पाकिस्तान) है।
5. सिंधु सभ्यता का पाँचवां बड़ा स्थल धोलावीरा (गुजरात, भारत) है।
6. सिंधु सभ्यता का छठा बड़ा स्थल कालीबंगा (राजस्थान, भारत) है।

- ➢ आजाद भारत का खोजा गया देश का पहला सभ्यता स्थल – रोपड़ (पंजाब) है।
- ➢ रोपड़ की खोज 1950 में बी. बी. लाल द्वारा की गई थी।
- ➢ रोपड़ (पंजाब) भारत में सतलज नदी के किनारे स्थित है।
- ➢ इस सभ्यता का भारत में सबसे नवीन स्थल – कोटड़ा (गुजरात) है, जिसकी खोज 2006 में हुई थी।

सिंधु सभ्यता की प्रमुख विशेषतायें:-

1. **अगर नियोजन**

   (1) नगर विन्यास

   - नगरो को स्थापित करने की प्रणाली या रूपरेखा को नगर नियोजन कहते है
   - इसके कई नगरों का नियोजन एक समान रुप से हुआ है।
   - सम्यता का नगर नियोजन दो भागों में बँटा हआ था -

     (i) पश्चिमी टीला व (ii) पुर्वी टीला

(i) पश्चिमी भाग - साइटेल भी कहा जाता है।

- यह उपरी/उंचे क्षेत्र पर चबुतरे बसाया गया था।
- इस टीले पर विशिष्ट वर्ग। राजा/अमीर वर्ग के लोग रहते थे
- इसे गढ़ी क्षेत्र भी कहा जाता है।
- यह किला आयताकार क्षेत्र का होता था।
- यहां विशिष्ट प्रकार के भवन मिले है।

(ii) पुर्वी भाग

- इसे निचला नगर कहा जाता था। (निम्न क्षैत्र था)
- यह सामान्य जनता का निवास स्थान था।
- यह तुलनात्मक रुप से बड़ाभाग था।
- यहां सामान्य घर बने मिले है।

✓ समुर्ण सिंधु सम्यता के सभी नगर दो भागों मे विभक्त थे

✓ लेकिन धोलावीरा तीन भागो मे बंटा हुआ था। (i) उपरी भाग (2) मध्य (3) निचला

✓ धोलावीरा सिंधु सभ्यता के नगरीकरण/नगर नियोजन का एकमात्र अपबाद माना जाता है

✓ नवीन शोद्द से यह पता चला है कि रखी गढ़ी भी तीन भागो मे विभक्त था

(2) नगर दुर्गीकरण

✓ नगरों में दुर्गीकरण व्यवस्था का प्रावधान मिलता है।

✓ इस सभ्यता के दोनों भाग (पूर्वी टीला और पश्चिमी टीला) सुरक्षा प्राचीर/परकोटे से घिरे होते थे। इसे दुर्गीकरण कहा जाता है।

✓ सुरक्षा प्राचीर के बड़े-बड़े प्रवेश द्वार भी बने होते थे।

✓ सुरक्षा प्राचीर कच्ची ईंटों से बनी होती थी।

✓ सिंधु सभ्यता में नगरों के सुरक्षा प्राचीर का उद्देश्य लुटेरों तथा पशु चोरी को रोकना था।

✓ कालीबंगा में नगर को अलग-अलग सुरक्षा प्राचीर से पूर्विकृत किया गया था।

ToppersNotes Unleash the topper in you

कालीबंगा का दुर्गीकरण

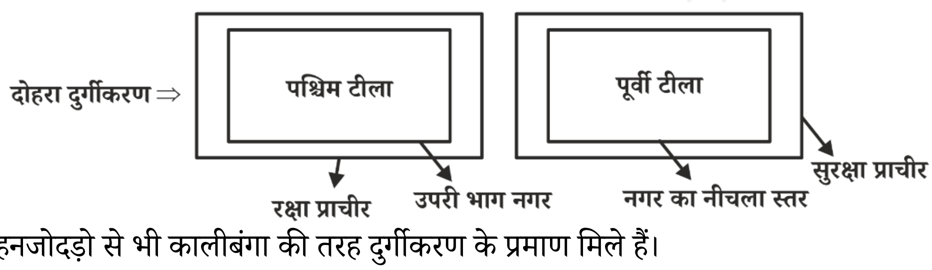

✓ हड़प्पा और मोहनजोदड़ो से भी कालीबंगा की तरह दुर्गीकरण के प्रमाण मिले हैं।

✓ सुरकोटड़ा (गुजरात) और लोथल (गुजरात) के नगर के दोनों भाग एक ही परकोटे/सुरक्षा प्राचीर से घिरे थे। केवल सुरकोटड़ा की सुरक्षा प्राचीर पत्थर से निर्मित थी।

✓ लोथल का गढ़ी क्षेत्र/दुर्ग/पश्चिम न होकर दक्षिण-पश्चिम में स्थित था।

✓ बनावली से गढ़ी क्षेत्र अलग सुरक्षा प्राचीर तथा गढ़ी और पूर्वी टीला एक ही सुरक्षा प्राचीर से घिरे हुए थे।

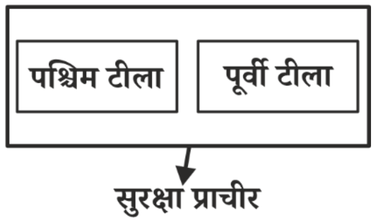

✓ चन्हूदड़ो (सिंध, पाकिस्तान) से दुर्ग का अस्तित्व नहीं मिला है।

(3) सड़क प्रणाली

✓ सिंधु सभ्यता के नगरों की सड़कें **Grid Pattern/ग्रिड पेटर्न/जालीदार पद्धति/चेस बोर्ड** पर आधारित थीं।

✓ प्रत्येक सड़क एक-दूसरी को समकोण पर काटती हुई थी।

- ✓ सिंधु सभ्यता के नगर की मुख्य सड़कें उत्तर से दक्षिण की तरफ जाती हैं।
- ✓ यहाँ की सड़कें कच्ची मिट्टी से बनी होती थीं।
- ✓ सड़कों की इसी प्रणाली पर बड़े चौराहों का निर्माण हुआ है।
- ✓ जिसकी तुलना जॉन मार्शल ने लंदन के ऑक्सफोर्ड सर्कल से की थी।
- ✓ नगर की प्रमुख सड़क को 'प्रथम सड़क' कहा गया है।

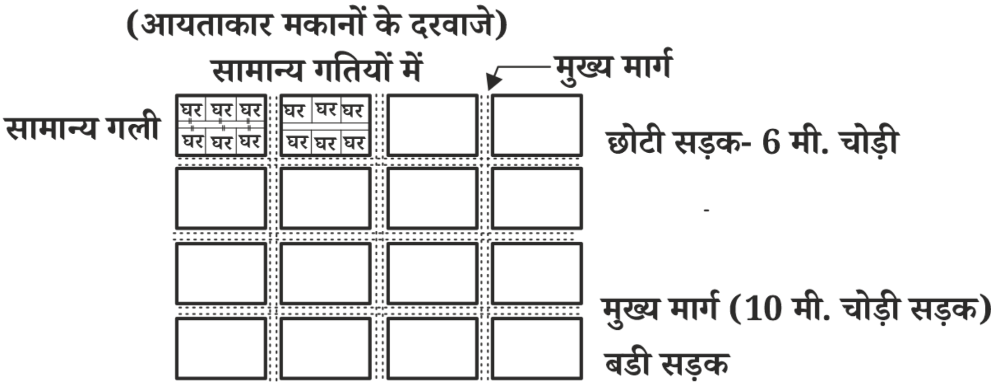

- ✓ घरों के दरवाजे मुख्य राजमार्ग/मुख्य सड़क की तरफ न खुलकर सामान्य गलियों की तरफ खुलते थे।
- ✓ लोथल से एक घर मिला है जिसका दरवाजा मुख्य मार्ग की तरफ खुला मिला है।

(4) ईंटें

I. पक्की ईंट - भवन निर्माण तथा नालियों के निर्माण में
II. कच्ची ईंट - सड़क निर्माण तथा सुरक्षा प्राचीर निर्माण में
III. L आकार की ईंट - दीवारों के किनारों वाले भाग पर
IV. अलंकृत ईंट - फर्श के निर्माण में (कालीबंगा से मिली है)
V. फन्नीदार ईंट - कुएं, रथ, और मेहराब बनाने में

- ✓ ईंटें चतुर्भुजाकार होती थीं।
- ✓ इस सभ्यता की ईंटों का अनुपात = 4:2:1
  (4 = लंबाई, 2 = चौड़ाई, 1 = ऊँचाई) ईंटों में समरूपता पाई जाती है।

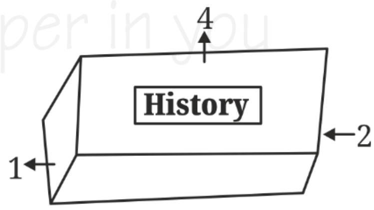

- ✓ सबसे बड़ी ईंट का आकार – मोहनजोदड़ो से प्राप्त (51.43 सेमी = लंबाई × 26.27 सेमी = चौड़ाई × 6.35 सेमी = ऊँचाई)।
- ✓ यह बड़ी वाली सबसे ईंट हमें मोहनजोदड़ो से मिली है।
- ✓ इस सभ्यता की सबसे छोटी ईंट का आकार (24.12 सेमी × 11.05 सेमी × 5.08 सेमी)।
- ✓ इस सभ्यता की ईंट का सामान्य आकार (27.94 सेमी × 13.97 सेमी × 6.35 सेमी)।
- ✓ सभ्यता के लगभग सभी स्थानों से इसी सामान्य आकार की ईंटें मिली हैं।
- ✓ ईंटों को जमाने के लिए गारे का प्रयोग किया जाता था।
- ✓ सिंधु सभ्यता के लोग ईंटों को बनाने के लिए जिप्सम का काम में लेते थे।
- ✓ नाली के निर्माण में जिप्सम का प्रयोग किया जाता है।
- ✓ ईंटों की चिनाई एवं जुड़ाई **इंग्लिश बांड** पद्धति को काम में लिया गया है।
- ✓ चन्हूदड़ो (पाक) से वक्राकार ईंटें मिली हैं (इंटरलॉक)।
- ✓ कच्ची ईंटों का सर्वाधिक प्रयोग लोथल, रंगपुर, कालीबंगा में किया जाता था।
- ✓ सिंधु सभ्यता की समकालीन सभ्यता **मिश्र सभ्यता** में कच्ची ईंटों का प्रयोग मिलता है।

(5) जल निकासी प्रणाली/नाली व्यवस्था/सीवरेज

- ✓ जल निकासी प्रणाली सिंधु सभ्यता की सबसे उत्कृष्ट विशेषता थी।
- ✓ इस सभ्यता के लगभग सभी स्थलों से नालियाँ पक्की ईंटों की मिली हैं।
- ✓ गुजरात के लोथल स्थल से घर कच्ची ईंटों के तथा नालियाँ पक्की ईंटों की मिली हैं।
- ✓ राजस्थान के कालीबंगा से लकड़ी की नालियाँ मिली हैं, यहाँ जल निकासी व्यवस्था का अभाव था।
- ✓ नालियों के निर्माण में चूने और जिप्सम का प्रयोग भी किया जाता था।
- ✓ बनावली में नाली व्यवस्था का पूर्ण अभाव मिलता है।
- ✓ सभ्यता की नालियाँ ईंटों तथा पत्थरों से ढकी होती थीं।
- ✓ सिंधु सभ्यता के प्रत्येक मकान में ढकी हुई नालियाँ मिली हैं।

2. सिंधु सभ्यता की सामाजिक व्यवस्था/सामाजिक जीवन प्रणाली:

I. इस सभ्यता में समाज का स्तरीकरण देखने को मिलता है। समाज में वर्गों के आधार पर (योद्धा वर्ग, व्यापारी वर्ग, बौद्धिक वर्ग तथा मजदूर वर्ग) स्तरीकरण था।

II. इस सभ्यता से मातृदेवी की मूर्तियाँ ज्यादा मिली हैं, इसी तथ्य के आधार पर प्रमाणित होता है कि यहाँ का समाज मातृ-सत्तात्मक था।

III. इस सभ्यता के समाज में चार वर्ग थे:

(1) विद्वान, (2) योद्धा, (3) मजदूर, (4) व्यापारी

IV. आभूषण सामग्री के आधार पर कहा जा सकता है कि इस समय महिलाओं की स्थिति बहुत अच्छी थी।

- महिलाओं का शृंगार बॉक्स (वेनिटी बॉक्स) तथा अंडाकार चूड़ियाँ हमें हड़प्पा से मिली हैं, और सोने की लड़ीओं का हार भी हड़प्पा से मिला है।
- **सुरकोटड़ा (गुजरात)** से शॉपिंग मॉल मिला है।
- **चन्हूदड़ो** से हमें लिपस्टिक का साक्ष्य मिला है।
- **मेहरगढ़ (पाक)** तथा **नासेरा (पाक)** से सिंदूर का प्रमाण मिला है।
- **गोमद/कसैलियन** का हार **मोहनजोदड़ो (पाक)** से मिला है।
- **मोहनजोदड़ो** से ताम्रपिन तथा कर्णफूल का प्रमाण भी मिलता है।
- इन उपर्युक्त प्रमाणों के आधार पर पता चलता है कि समाज में महिलाओं का अच्छा सामान था।

V. व्हीलर महोदय तथा गार्डन चाइल्ड के अनुसार सेघव समाज में दास प्रथा विद्यमान थी। **S.R. राव** तथा **R.S. शर्मा** ने दास प्रथा के मत का खंडन किया है।

VI. **कालीबंगा (राजस्थान)** से 1 तथा **लोथल (गुजरात)** से 3 युगल समाधियाँ मिली हैं, जिसके आधार पर यहाँ सत्ती प्रथा का अनुमान लगाया जाता है। **S.R. राव** ने इसे सत्ती प्रथा का प्रमाण माना है, लेकिन यह संदिग्ध प्रमाण है।

VII. सिंधु सभ्यता के लोग मनोरंजन क्रियाओं और आखेटन/खेल में भाग लेते थे।**लोथल (गुजरात)** से पासे का बोर्ड, **धोलावीरा** से खेल स्टेडियम, **मोहनजोदड़ो** से पासे के फलक प्राप्त हुए हैं। हड़प्पा तथा मोहनजोदड़ो से टेराकोटा के मुखोटे मिले हैं। यहाँ के निवासी शिकार करते थे, यहाँ तीर-भाले के प्रमाण मिले हैं।

VIII. संहांव काल के निवासी मांसाहारी तथा शाकाहारी दोनों थे।

IX. यहाँ के निवासी ग्रामीण तथा नगरीय दोनों क्षेत्रों में रहते थे।

X. यहाँ के निवासी सूती और ऊनी दोनों प्रकार के वस्त्र पहनते थे।

XI. हड़प्पा सभ्यता के निवासी शांतप्रिय थे। ये युद्ध कला से अपरिचित थे।

XII. सिंधु सभ्यता में कम से कम चार प्रजातियाँ मौजूद थीं।

1. **प्रोटो-ऑस्ट्रेलाइड/कॉकेशियन (मूल स्थान - यूरोप)**
    - ✓ यह हड़प्पा क्षेत्र में प्रवेश करने वाला पहला समूह था। **मोहनजोदड़ो** से प्राप्त कांसे की नर्तकी की मूर्ति इसी समूह की मानी जाती है।
    - ✓ हड़प्पा की एक कब्र से प्राप्त तीन विदेशियों के सिर इसी प्रजाति का प्रमुख साक्ष्य है।
2. **भू-मध्य सागरीय / मेडिटेरियन**
    - ✓ इसका संबंध द्रविड़ जाति से माना जाता है।
    - ✓ इन्हीं को सिंधु सभ्यता का निर्माता माना जाता है।
    - ✓ द्रविड़ लोगों को इस सभ्यता का जनक माना जाता है।
3. **मंगोलायड**
4. **अल्पाइन** - हिमालय क्षेत्रों में पाए जाने वाली प्रजाति

XIII.सिंधु सभ्यता की अंत्येष्टि क्रियाएँ/शवाधान:- यहां इस सभ्यता में तीन प्रकार से शवाधान किया जाता था:

1. **पूर्ण शवाधान**: मृतक के साथ बर्तन, आभूषण और अन्य वस्तुएं रखी जाती थीं। यह सभ्यता का सबसे ज्यादा प्रचलित शवाधान था। इसमें मृतक का सिर उत्तर की ओर होता था (केवल कालीबंगा में सिर दक्षिण में होता था, तथा लोथल में सिर पूर्व में मिला है, इसके अलावा रोपड़ में सिर पश्चिम में मिला है)।
2. **आशिक शवाधान**: शव को खुले मैदान में जंगली जानवरों को खाने के लिए छोड़ दिया जाता था। बाद में बचे हुए अवशेषों को समाधिस्थ करते थे। इस के प्रमाण कालीबंगा तथा बहावलपुर से मिले हैं।

Note - कालीबंगा से एक अंडाकार कब्र मिली है, जिसमें एक बालक की खोपड़ी मिली है, जिसमें 6 छेद मिलते हैं।

- इसी आधार पर इसे शल्य चिकित्सा का प्रमाण माना जाता है (कालीबंगा)।
- **रोपड़ (पंजाब)** के मालिक के साथ कुत्ते को दफनाया गया था।
- **लोथल (गुजरात)** से शव के साथ बकरी दफनाने का प्रमाण मिला है।
- **मोहनजोदड़ो** से किसी प्रकार की कोई कब्र नहीं मिली है।

3. **दाह संस्कार/कलश शवाधान**: हड़प्पा से आंशिक शवाधान, मोहनजोदड़ो से कलश शवाधान, कालीबंगा से तीनों प्रकार के शवाधान के साथ मिलता है।

3. सिंधु सभ्यता का राजनीतिक जीवन

- ✓ स्टुअर्ट पिग्गट के अनुसार "यह सभ्यता अत्यंत केंद्रीकृत सभ्यता रही होगी, जिसमें शासन पर पुरोहित वर्ग का प्रभाव था।"
- ✓ स्टुअर्ट पिग्गट ने हड़प्पा सभ्यता के शासन को अत्यंत केंद्रीकृत साम्राज्य माना है, जो पुरोहित वर्ग द्वारा संचालित होता था।
- ✓ स्टुअर्ट पिग्गट ने हड़प्पा तथा मोहनजोदड़ो को एक विस्तृत साम्राज्य की जुड़वा राजधानी माना है।

Note

सिंधु सभ्यता की प्रथम राजधानी - हड़प्पा, दूसरी - मोहनजोदड़ो

सिंधु सभ्यता की जुड़वा राजधानी - हड़प्पा व मोहनजोदड़ो

सिंधु सभ्यता की तीसरी राजधानी - कालीबंगा (दशरथ शर्मा ने)

सिंधु सभ्यता के औरस पुत्र - रंगपुर व प्रभास पत्तन

- ✓ स्टुअर्ट पिग्गट प्रथम विद्वान थे जिन्होंने सभ्यता की राजव्यवस्था का अध्ययन किया।
- ✓ हड़प्पा सभ्यता की दो राजधानियां - हड़प्पा तथा मोहनजोदड़ो थी । इस मत का खण्डन आत्चिन ने किया था।

Unleash the topper in you

- ✓ इतिहासकार रंगनाथ राव ने इस मत का समर्थन करते हुए इस सभ्यता को महान सम्म्राज्य बताया था।
- ✓ रामशरण शर्मा ने सिंधु सभ्यता को व्यापारिक सभ्यता बताया। इस सभ्यता के समय सर्वाधिक वणिक वर्ग निवास करते थे।
- ✓ ए.एल. बॉशम ने हड़प्पा सभ्यता की प्रकृति थियोक्रेटिक (धर्मतंत्रीय) मानी थी।
- ✓ ए. एल. बॉशम ने अपनी पुस्तक - Wonder that was india" (अद्भुत भारत हड़प्पा सभ्यता में धर्म आधारित शासन प्रणाली नियमान थी।
- ✓ हड़प्पा सभ्यता की शासन व्यवस्था पुरोहित वर्ग के हाथों में केन्द्रित थी।
- ✓ मार्टिमर व्हीलर के अनुसार हड़प्पा सभ्यता में मध्यम वर्गीय जनतंत्रात्मक शासन व्यवस्था थी। इसमे (धर्म की महता को स्वीकार किया गया)
- ✓ फैगर सर्विस के अनुसार "यह सभ्यता न तो सम्राज्य था और न ही राज्य
- ✓ अर्नेस्ट मैके के अनुसार सभ्यता का शासन एक प्रतिनिधि शासक के हाथों में केन्द्रित था।
- ✓ हन्टर के अनुसार हडप्पा सभ्यता का शासन जनतंत्रात्मक था।
- ✓ बी.बी. लाल के अनुसार' सभ्यता की प्रशासनिक व्यवस्था महाजनपद प्रशासन की तरह था। महाजनपदो की तरह इनकी (राज्यों की) भी राजधानिया मिलती है।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

2 CHAPTER प्राचीन काल में नवीन धार्मिक सम्प्रदाय का उदय

प्राचीन भारत के कुछ महत्वपूर्ण सम्प्रदाय

क्रम	सम्प्रदाय	संस्थापक
1	जैन धर्म	संस्थापक – **ऋषभदेव** वां. संस्थापक – **महावीर स्वामी**
2	बौद्ध धर्म	**महात्मा बुद्ध**
3	आजीवक	**मक्खलि पुत्र गोशाल**
4	घोर अक्रियावादी	**पुरण कस्सप**
5	नित्यवादी	**पुकुध कच्चायन**
6	उच्छेदवादी	**अजित केशकम्बलिन**

जैन धर्म

- **जैन** शब्द की उत्पत्ति **'जिन'** शब्द से मानी जाती है, जिसका अर्थ है 'विजेता' अर्थात् जैन वह है जिसने अपनी इन्द्रियों को जीत लिया हो।
- **जैन परंपरा** के अनुसार, जैन धर्म में कुल **24 तीर्थंकर** हुए हैं, जो इस प्रकार हैं:

24 तीर्थंकरों की सूची

क्रम	तीर्थंकर	प्रतीक
1	ऋषभदेव / आदिनाथ	वृषभ (बैल)
2	अजितनाथ	हाथी
3	सम्भवनाथ	अश्व (घोड़ा)
4	अभिनन्दन	बन्दर
5	सुमतिनाथ	क्रौंच पक्षी
6	पद्मप्रभु	कमल
7	सुपार्श्वनाथ	स्वास्तिक
8	चन्द्रप्रभु	अर्द्धचन्द्र
9	पुष्पदंत	मकर
10	शीतलनाथ	श्रीवत्स
11	श्रेयांसनाथ	गैंडा
12	वासुपूज्य	भैंसा
13	विमलनाथ	वराह

14	अनन्तनाथ	बाज (गरुड़)
15	धर्मनाथ	वज्र (या वस्तु)
16	शांतिनाथ	हिरण
17	कुन्थुनाथ	बकरा
18	अरहनाथ	मत्स्य (मछली)
19	मल्लिनाथ	कलश
20	मुनि सुब्रत	कछुआ
21	नमिनाथ	नीला कमल
22	अरिष्टनेमि	शंख
23	पार्श्वनाथ	सर्प
24	महावीर स्वामी	सिंह

जैन धर्म – प्रमुख तथ्य और विवरण

- उपर्युक्त तीर्थंकरों का जीवनवृत्त **कल्पसूत्र** ग्रंथ में मिलता है।
- **कल्पसूत्र** ग्रंथ के लेखक **भद्रबाहु** थे।
- जैन धर्म के प्रारंभिक 15 तीर्थंकरों का जन्म पूर्वी उत्तर प्रदेश तथा बिहार में होना इस बात का प्रमाण है कि **जैन धर्म का वास्तविक उद्भव महावीर स्वामी के बाद** हुआ था।
- **ऋषभदेव / आदिनाथ** जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर थे।
- इन्हें जैन धर्म का **संस्थापक** माना जाता है।
- ऋषभदेव का जन्म **अयोध्या** में हुआ माना जाता है।
- आदिनाथ का उल्लेख **ऋग्वेद** तथा **यजुर्वेद** में हुआ है।
- इन्हें **केसरियानाथ** भी कहा जाता है।
- **भागवत पुराण** में आदिनाथ को **विष्णु का अवतार** बताया गया है।
- **वैदिकेतर साहित्य** में ऋषभदेव को **स्वयम्भु कश्यप** कहा गया है।
- तीर्थंकर बनने से पूर्व वे एक **चक्रवर्ती सम्राट** थे।
- उनके पुत्र का नाम **भरत** था।
- दूसरे पुत्र का नाम **गौतमेश्वर बाहुबली** था।
- **अजीतनाथ** का जन्मस्थान भी **अयोध्या** को माना जाता है।
- अजीतनाथ का प्रथम उल्लेख **यजुर्वेद** में हुआ है।
- जैन धर्म के 22वें तीर्थंकर **अरिष्टनेमि** थे।
- अरिष्टनेमि ने **गिरनार पर्वत** पर तप किया था।
- जैन धर्म के 23वें तीर्थंकर **पार्श्वनाथ** थे। पार्श्वनाथ के अनुयायियों को **निर्ग्रन्थी** कहा जाता है।
- इनका जन्म **800 ई.पू.** में माना जाता है।
- जन्मस्थान – **वाराणसी (उत्तर प्रदेश)**

- पिता का नाम **अश्वसेन** एवं माता का नाम **वामा** था।
- पार्श्वनाथ ने **30 वर्ष** की आयु में गृह त्याग किया।
- इनकी पत्नी का नाम **प्रभावती** था।
- **झारखंड के सम्मेद पर्वत** पर 83 दिन की तपस्या के बाद ज्ञान की प्राप्ति हुई।
- इनका प्रतीक **सर्प** था।
- इन्होंने **100 वर्ष** की अवस्था में **सम्मेद पर्वत** पर देह त्याग दिया।
- **महावीर स्वामी** ने पार्श्वनाथ को **पुरुषादनीय** कहा है।
- पार्श्वनाथ को **लोकपूजित, सर्वज्ञ, सम्बुद्ध** नाम से जाना जाता है।
- पार्श्वनाथ की प्रथम अनुयायी थीं – **उनकी माता वामा** तथा **पत्नी प्रभावती**।
- पार्श्वनाथ के **भिक्षु संघ** के अध्यक्ष – **आर्यदत्त**
- पार्श्वनाथ के **भिक्षुणी संघ** की अध्यक्षा – **पुष्पचूला**
- पार्श्वनाथ ने **चार महाव्रत / चातुर्याम / चाउज्जम** बताए –

  1. **सत्य**   2. **अहिंसा**   3. **अस्तेय**   4. **अपरिग्रह**

- जैन धर्म का **पाँचवाँ महाव्रत "ब्रह्मचर्य"** महावीर स्वामी ने जोड़ा।
- ये सभी **पाँच महाव्रत भिक्षुओं** के लिए थे।

महावीर स्वामी

- **जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर** एवं **अंतिम तीर्थंकर** थे।
- **जैन धर्म के वास्तविक संस्थापक** माने जाते हैं।
  - ✓ **जन्म** – **599 ई.पू.** (चैत्र शुक्ल त्रयोदशी) (कुछ तथ्यों में **540 ई.पू.** भी माना गया है)
  - ✓ **स्थान** – **कुण्डग्राम (वायु कुण्ड)**, वैशाली, बिहार (वज्जि संघ का भाग)
  - ✓ **माता** – **त्रिशला** (लिच्छवी राजा **चेटक** की बहन)
    - त्रिशला के अन्य नाम – **प्रियकारिणी** तथा **विदेहदत्ता**
    - महावीर स्वामी को **विदेहपुत्र** भी कहा जाता है।
  - ✓ **पिता** – **सिद्धार्थ**, जो **ज्ञातृक कुल** (इक्ष्वाकु क्षत्रिय) के प्रधान थे।
    - उन्हें **श्रेयांस** तथा **यासास** भी कहा जाता है।
  - ✓ **पत्नी** – **यशोदा**, (कुण्डिन्य गोत्र की राजकुमारी, वसंतपुर/कलिंग की राजकुमारी।
  - ✓ **पुत्री** – **अणोज्जा** (जिसे प्रियदर्शना भी कहा जाता है)
    - प्रियदर्शना का विवाह महावीर स्वामी के भांजे **जामाली** से हुआ।
    - **जामाली** ही आगे चलकर महावीर स्वामी का **प्रथम शिष्य** बना।
    - जामाली, महावीर स्वामी की **बहन सुदर्शना** का पुत्र था।
  - ✓ **कुल -** महावीर स्वामी का **कुल** – **ज्ञातृक कुल** था।
  - ✓ बचपन का नाम – **वर्धमान**
    - कुछ परंपराओं के अनुसार, **ऋषभदत्त ब्राह्मण** की पत्नी **देवनन्दा** को महावीर की जन्मदात्री माता माना गया है।
- **गृहत्याग**
  - ✓ **वर्धमान** ने अपने बड़े भाई **नान्दिवर्धन** से आज्ञा लेकर **30 वर्ष** की अवस्था में **गृहत्याग** कर दिया।

- ✓ गृहत्याग के बाद वे **बड़वन उद्यान** में **अशोक वृक्ष** के नीचे विश्राम करते हैं।
- ✓ गृहत्याग के **13 माह** बाद **वस्त्र त्याग** कर दिए और **बलुआ नदी / स्वर्ण बालुका नदी** में बहा दिए।
- ✓ इसी समय के दौरान **आजीवक सम्प्रदाय** के संस्थापक **मक्खलि पुत्र गोशाल** इनके शिष्य बने।
- ✓ **महावीर स्वामी** तथा **मक्खलि पुत्र गोशाल** की पहली मुलाकात **नालंदा (बिहार)** में हुई थी।
- ✓ जैन ग्रंथ **भगवती सूत्र** के अनुसार, दोनों के बीच बाद में **विवाद / संघर्ष** हुआ।
- ✓ **वर्धमान** से अलग होकर **मक्खलि पुत्र गोशाल** ने **आजीवक सम्प्रदाय** की स्थापना की।

➢ **ज्ञान प्राप्ति**

- ✓ गृहत्याग के **12 वर्षों** के बाद, **आयु – 42 वर्ष** की अवस्था में, **वैशाख शुक्ल दशमी**
- ✓ **नदी – ऋजुपालिका** (उज्जवालिका / बराकर नदी)
- ✓ **ग्राम – जाम्भिका गांव**
- ✓ **पेड़ – साल / शीशम**
- ✓ ज्ञान को **कैवल्य** कहा गया।
- ✓ ज्ञान प्राप्ति के बाद **वर्धमान** स्वयं **केवलिन** कहलाए।
- ✓ पूज्य होने के कारण **अर्हत** कहलाए (मोक्ष प्राप्ति के बाद)।
- ✓ इन्द्रियों को जीतने के कारण **महावीर, जिन** कहलाए।
- ✓ **जिन** का अर्थ होता है – विजेता (इन्द्रियों के विजेता)।
- ✓ बौद्ध ग्रंथों में महावीर स्वामी को **निगण्ठ नाथपुत** कहा गया है।
- ✓ **महावीर स्वामी को नदियों में गंगा, हाथियों में ऐरावत** (इंद्र का हाथी), **पक्षियों में गरुड़** तथा **सिंह** के समान माना गया है।
- ✓ ज्ञान प्राप्ति के बाद लगातार **30 वर्षों** तक ज्ञान का प्रसार किया।
- ✓ वे **आठ महीने** तक भ्रमण करते और वर्षा ऋतु के शेष **चार महीनों** में विश्राम करते।
- ✓ महावीर ने प्रथम **वर्षावास आस्तिक ग्राम** तथा अंतिम **वर्षावास पावापुरी** में व्यतीत किया।
- ✓ सर्वाधिक वर्षावास **राजगृह** में (14 बार), दूसरा स्थान **वैशाली** का रहा (12 बार)।
- ✓ **वैशाली** को महावीर की **जननी** कहा जाता है।
- ✓ महावीर स्वामी ने पहला उपदेश **राजगृह** (विपुलांचल पहाड़ी) में **बराकर नदी** के किनारे पर **अर्धमागधी भाषा** (आर्ष प्राकृत) में दिया था।
- ✓ महावीर स्वामी का प्रथम शिष्य **जामाली** था (जो दामाद और भांजा भी था)।
- ✓ महावीर स्वामी की प्रथम शिष्या **चंदना** थी (जो भिक्षुणी संघ की अध्यक्षा भी थी)।
- ✓ महावीर स्वामी ने ज्ञान प्राप्ति के बाद **30 वर्षों** तक ज्ञान का प्रसार किया।
- ✓ **527 ई.पू.** में **पावापुरी** में **कार्तिक अमावस्या** (दीपावली) के दिन **72 वर्ष** की अवस्था में शरीर का त्याग कर दिया।

जैन धर्म की शिक्षाएँ

- ➢ **जैन धर्म** पुनर्जन्म पर विश्वास करता है।
- ➢ पुनर्जन्म का कारण **संचित कर्मफल** है।
- ➢ इसके अनुसार, **सांसारिक कर्मों** के त्याग से ही व्यक्ति का **मोक्ष / मुक्ति** संभव है।
- ➢ **जैन धर्म** संन्यासी जीवन पर बल देता है।
- ➢ इस धर्म में **मोक्ष** जीव का अंतिम लक्ष्य है।
- ➢ **जैन धर्म** में कर्म फल से मुक्ति हेतु **त्रिरत्न** का अनुशीलन आवश्यक है।

जैन धर्म के त्रिरत्न

1. **सम्यक दर्शन/श्रद्धा/मनन** – सत्य में विश्वास रखना।
   इसके आठ भेद भी बताए गए हैं।
2. **सम्यक ज्ञान** – **जैन धर्म** एवं उसके सिद्धांतों का ज्ञान ही **सम्यक ज्ञान** है।
   सम्यक ज्ञान के पाँच प्रकार बताए गए हैं:
   I. **मति** – इन्द्रियों द्वारा ज्ञान प्राप्त करना
   II. **श्रुति** – सुनकर प्राप्त किया गया ज्ञान
   III. **अवधि** – दिव्य ज्ञान / अलौकिक ज्ञान
   IV. **मनःप्रर्याय** – दूसरों के मन का ज्ञान जानना / मन पढ़ना
   V. **कैवल्य** – सर्वोच्च ज्ञान, पूर्ण ज्ञान (यह केवल तीर्थंकरों को प्राप्त है)
3. **सम्यक चरित्र** /आचरण- जो कुछ भी जाना जा चुका है और सही माना जा चुका है, उसे कार्यरूप में परिणत करना ही **सम्यक चरित्र** है।
   इस हेतु **जैन धर्म** पंच महाव्रत की अवधारणा तथा **पाँच अणुव्रत** की अवधारणा दी है, जिसका उद्देश्य **अंतःकरण की शुद्धता** है। भिक्षुओं के लिए **पंच महाव्रत** तथा गृहस्थों के लिए **पाँच अणुव्रत** हैं।

पंच महाव्रत

1. **अहिंसा**
   - ✓ यह जैन धर्म का सबसे प्रमुख सिद्धांत है।
   - ✓ इसमें सभी प्रकार की अहिंसा के पालन पर बल दिया गया है।
   - ✓ **मन, वचन, कर्म** के आधार पर कोई हिंसा न करना।
   - ✓ **जैन दर्शन/धर्म** में **6 प्रकार के व्यवसायों** को मान्यता प्राप्त है:
     i. **प्रशासन** (अस्सी)
     ii. **लेखन**
     iii. **कृषि**
     iv. **विद्या**
     v. **वाणिज्य**
     vi. **शिल्प**
   - ✓ **जैन धर्म** के अनुसार **अस्सी** (प्रशासन) तथा **कृषि** में हिंसा ज्यादा है, जबकि **वाणिज्य** में सबसे कम हिंसा है।
   - ✓ इसी कारण **जैन धर्म** वाणिज्य व्यवसाय पर सर्वाधिक बल देता है।
2. **सत्य** – मन, वचन, कर्म से हमेशा सत्य बोलना।
3. **अस्तेय** – चोरी न करना।
4. **अपरिग्रह** – धन-संग्रह नहीं करना।
5. **ब्रह्मचर्य**
   - ✓ यह **महावीर स्वामी** द्वारा जोड़ा गया।
   - ✓ यह **चातुर्याम** शिक्षा से बाहर था।
   - ✓ यह भिक्षुओं के **ब्रह्मचर्य व्रत** पर बल देता है।
   - ✓ **जैन धर्म** ने **सृष्टि के निर्माण** में **ईश्वर का योगदान** नहीं माना है।
   - ✓ **जैन धर्म** के अनुसार सृष्टि का निर्माण **सार्वभौमिक विधान** से हुआ है, इसलिए **जैन धर्म प्रलय** की अवधारणा में विश्वास नहीं करता।
   - ✓ **जैन धर्म** में सृष्टि को **अविनाशी** माना गया है — यह चक्र के रूप में चलती है।

- ✓ **आचार्य हेमचन्द्र** द्वारा रचित 'श्लाका पुरुष चरित' ग्रंथ से **63 श्लाका पुरुषों** की जानकारी मिलती है।
  इन 63 श्लाका (महान पुरुष) पुरुषों में –
  24 तीर्थंकर, 12 चक्रवर्ती सम्राट, 9 बलभद्र, 9 नारायण, 9 प्रतिनारायण
- ✓ **जैन धर्म** के अनुसार **पतन काल** में व्यक्ति बोना होता जाएगा और उसकी उम्र भी **20 वर्ष** तक रह जाएगी।
- ✓ **जैन धर्म में आत्मा का सिद्धांत अनेकान्तवाद** या **आत्मा की बहुलता** का सिद्धांत कहा जाता है।
- ✓ **जैन धर्म** के अनुसार समस्त विश्व **सत्** (जीव) और **असत्** (अजीव) नामक दो नित्य एवं स्वतंत्र तत्वों से मिलकर बना है।
  सत् (जीव) के तीन गुण (i) **चैतन्य** (ii) **सुख** (iii) **वीर्य**
- ✓ शरीर का बाहरी तत्व **असत् / अजीव** है, तथा आंतरिक रूप **सत् / जीव** है (आत्मा)।
- ✓ **सत्** के तीनों तत्व **कर्मफल** से प्रभावित होते हैं।
- ✓ असत् / अजीव का विभाजन **पाँच भागों** में किया गया है:
  1. **पुद्गल**
  2. **काल**
  3. **आकाश**
  4. **धर्म**
  5. **अधर्म**
- ✓ इनमें **काल अनास्तिकाय द्रव्य** है, बाकी चारों **अस्तिकाय द्रव्य** माने गए हैं।
- ✓ **त्रिरत्न** के पालन करने से असत् का सत् की ओर प्रवाह रुक जाता है, इसे **संवर** कहा जाता है।
- ✓ जब सत् असत् से मुक्त हो जाए और पूर्व कर्म फलों का नाश आरंभ हो जाए, तो उसे **निर्जरा** कहा जाता है। इसी स्थिति के बाद व्यक्ति **निर्वाण** को प्राप्त करता है।
- ✓ **जैन परंपरा** के अनुसार **अठारह पाप** माने जाते हैं।
- ✓ **जैन धर्म** में मुख्य उपदेशक को **घेरा** कहा जाता है।
- ✓ **स्यादवाद**, जिसे **सप्तभंगी नय** भी कहा जाता है, को **ज्ञान की सापेक्षता का सिद्धांत** कहा जाता है।
- ✓ प्रत्येक वस्तु या तत्व में अनेक धर्मक / गुण होते हैं, उसके सापेक्ष व्यक्ति विशेष का ज्ञान **अपूर्ण** होता है, इस कारण व्यक्ति तत्व / वस्तु की जानकारी के संबंध में हमेशा **'शायद'** शब्द का उपयोग करता है यही **स्यादवाद** तथा **अनेकान्तवाद** है।
- ✓ **अपूर्ण / अधूरा ज्ञान** को **नयज्ञान** कहा जाता है।
- ✓ जब ज्ञान पूर्ण रूप से प्राप्त होता है, तो उसे **कैवल्य ज्ञान** / **प्रमाण ज्ञान** कहा जाता है।
- ✓ **जैन धर्म नास्तिक है** — यह **वेदों** पर विश्वास नहीं करता।
- ✓ **जैन धर्म में वेदों को अप्रमाणिक** माना गया है।
- ✓ यह धर्म **ईश्वर** पर विश्वास करता है, लेकिन उनके अनुसार ईश्वर **जिन** से नीचे हैं।
- ✓ **जैन धर्म के अनुसार** सृष्टि की कोई भी घटना **ईश्वर के कारण नहीं होती**, बल्कि **कर्मों** के कारण होती है। इसी कारण **जैन धर्म** को **अनीश्वरवादी धर्म** कहा जाता है।
- ✓ **जैन धर्म में युद्ध** और **कृषि** वर्जित है, क्योंकि इनमें **जीव-हिंसा** होती है।

जैन धर्म का विकास

- ➢ **पावा** में **महावीर स्वामी** ने अपने जीवनकाल में एक संघ की स्थापना की, जिसमे **11 प्रमुख अनुयायी** सम्मिलित थे, जिन्हें **गणधर** कहा जाता है।
- ➢ ये गणधर **ब्राह्मण** थे, जिनको पावा में दीक्षा दी गई।
- ➢ **11 गणधर** निम्नलिखित प्रकार थे:
  I. **इन्द्रभूति** (प्रथम गणधर)
  II. **अग्निभूति**
  III. **वायुभूति**
  IV. **आर्यव्यक्त**